मिशन शिक्षण संवाद

काव्यरूप

हमारा परिवेश

4

काव्य निर्माण

मन्जू शर्मा (स०अ०) प्रा०वि० नगला जगराम
ब्लॉक- सादाबाद, जनपद- हाथरस

हमारी पहचान- हमारा परिवार

(तर्ज़ - है अपना दिल तो आवारा।)

है अपना घर एक दूजे में प्यार,
हमारी पहचान - हमारा परिवार।
जहाँ पर मिलतीं हैं खुशियाँ अपार,
वही कहलाता कुशल परिवार।।

हम रहते दिन रात, जिन लोगों के साथ।
छोटे-बड़े कामों में, यहाँ सभी बँटाते हाथ।।
कहीं ज्यादा लोग, तो कहीं होते कम।
परिवार दो तरह के, दोनों ना होते सम।।
कोई छोटा तो कोई बड़ा,
मिलजुल कर मनाते हैं त्योहार।।
है अपना ....

संयुक्त परिवार

दादा, चाचा, पिता, दादी, चाची, माता।
साथ में इनके बच्चे, संयुक्त परिवार कहाता।
जिस घर में मम्मी-पापा, संग में बच्चे रहते।
ऐसा परिवार ही, एकाकी परिवार कहाता।।
परिवारों से मिलकर बने समाज,
जहाँ लोगों का हो आदर सत्कार।।
है अपना ....

एकाकी परिवार

स्थानीय पेशे एवं व्यवसाय (भाग-1)

(तर्ज- वह शक्ति हमें दो दयानिधे)

बढ़ई, कुम्हार, दर्जी, किसान,
इन सब के कार्य बताते हैं।
डॉक्टर, मोची, राजगीर, लोहार,
आज परिचित इनसे कराते हैं।।

बढ़ई के पेशे को बढ़ईगिरी,
सागौन, बबूल, शीशम लकड़ी।
इनके प्रयोग से यह नित-नित,
सुन्दर फ़र्नीचर बनाते हैं।।

मिट्टी को खोदकर हाथों से,
तैयार करें आवा उपले से।
चाक द्वारा बनाते ये बर्तन,
कलाकार कुम्हार कहाते हैं।।

सुई, धागा, इंचीटेप, मशीन,
दर्जी सिलता कपड़े रंगीन।
सब लोग जो कपड़े पहनते हैं,
दर्जी द्वारा सिले जाते हैं।।

स्थानीय पेशे एवं व्यवसाय (भाग-2)

(तर्ज- वह शक्ति हमें दो दयानिधे)

बढ़ई, कुम्हार, दर्जी, किसान, इन सब के कार्य बताते हैं।
डॉक्टर, मोची, राजगीर, लोहार, आज परिचित इनसे कराते हैं।।

खुरपी, कुदाल, हँसिया औजार,
बीज बोने को जमीन करे तैयार।
मेहनत यह करते बेशुमार,
अन्नदाता किसान कहलाते हैं।।

जो तमाम रोगों से बचाते हैं,
बच्चों डॉक्टर कहलाते हैं।
स्टैथोस्कोप ,थर्मामीटर से,
बीमारी का पता लगाते हैं।।

शिलापंच, सुई, धागा, सरौता,
मोची सही करे चप्पल-जूता।
कारबुट, डेरी झबिया आदि
मोची के औजार कहाते हैं।।

गली मोहल्लों की करे यह सफाई,
सफाई ही रोगों की है दवाई।
सफाई कर्मी इन्हें हम कहते हैं,
जो निशदिन झाड़ू लगाते हैं।।

कैसे बने घर

(तर्ज- तेरा मेरा प्यार अमर)

गर्मी, सर्दी, वर्षा का कहर, इनसे सुरक्षा करें अपना घर।
घास, फूस मिट्टी से बने,ऐसे घरों को कहें कच्चे घर।।
गर्मी....................

बीता समय और हुआ बदलाव, बदले घर संग बदला स्वभाव।
कुछ कच्चे कुछ पक्के घर, परिवार संग सब रहें मिलकर।
आंगन, बरामदा, रसोईघर, इनसे सुसज्जित लगे अपना घर।।
गर्मी....................

सीमेंट, बालू, ग्रेनाइट पत्थर, इन चीजों से बनें पक्के घर।
एक, दो और बहु मंजिला, सुंदर इमारत बनें बंगला।
आँधी, तूफान से बचाये हमें, ऐसे हमारे अनोखे घर।।
गर्मी.....................

सूखा और गीला कचरा, चारों तरफ जब हो बिखरा।
बदबू भी आती बैठे मक्खियाँ, कीड़े फैलाते हैं बीमारियाँ।
प्रदूषित होता है पर्यावरण, स्वास्थ्य पर पड़े बुरा असर।।
गर्मी........................

कचरे का हो सही निस्तारण, 4R का सब करें अनुसरण।
कचरे से बन खाद तैयार हो, खेतों में इसका उपयोग हो।
शौचालयों का होता निर्माण, गाँव-गाँव और शहर-शहर।।
गर्मी........................

हमारा भोजन

(तर्ज- बार बार तुझे क्या समझाए।)

अगर स्वस्थ्य रहना हैं बच्चों लो पोषित आहार।
भोजन से ही मिले हम सबको ऊर्जा अपार।।

हम प्रतिदिन जो भोज्य पदार्थ खाते हैं।
बताओ बच्चों ये कहाँ से प्राप्त होते हैं।
गेहूँ, जौ, बाजरा, मक्का और अनाज में ज्वार।।
भोजन......................

पेड़-पौधे फल देते बनती है सेहत।
किसान हमारे अन्नदाता करते मेहनत।
जाड़ा, गर्मी, वर्षा में भी करें कार्य बेशुमार।।
भोजन......................

कुछ भोज्य पदार्थ जन्तुओं से मिलते हैं।
दूध, मांस, मछली, अण्डे इन्हें कहते हैं।
पोष्टिक आहार लेना बच्चों ना होंगे बीमार।।
भोजन......................

जीवन में अच्छी आदत अपनाना तुम।
बिना हाथ धोए खाना ना खाना तुम।
खुली हुई चीजें, कटे फल ना ही लेना अचार।।
भोजन......................

रोज सवेरे खुली हवा में योग करो।
अपने शरीर का रोगों से बचाव करो।
समय से सोना समय से जगना आदत लो सुधार।।
भोजन.........................

खेतों से बाजार तक

(तर्ज- धीरे-धीरे बोल कोई सुन ना ले।)

खेतों में फसलें लहलहातीं,
कैसे ये बच्चों उगाई जातीं।
आज तुम्हें समझाते हैं,
कैसे इन्हें उगाते हैं।।
खेतों..................

पहले खेत की जुताई करते हैं,
फिर बीज बोकर सिंचाई करते हैं।
बिना बोए जो पौधे उगते हैं,
खर-पतवार इन्हें हम कहते हैं।
ऐसे पौधों को निकालकर,
कीटनाशक दवा मिलाकर।
जब फसलें पक तैयार हों,
बाजार में ले जायें काटकर।।
खेतों..................

अनाज वाली फसलों के दानों को,
थ्रेसर मशीन से अलग करें इनको।
ट्रैक्टर, बैलगाड़ी की मदद से फिर,
मंडी में ले जाते हैं अनाज को।
मेहनत का फल मीठा होता,
अन्नदाता किसान कहलाता।
फिर बाजार में इन फसलों को,
सही दामों में बेचा जाता।।
खेतों....................

जीव-जन्तुओं की उपयोगिता

(तर्ज- दोहा)

विविध भांति के जीव से, भरा हुआ संसार।
भिन्न परस्पर सभी का, रूप रंग आकार॥

मांसाहारी जीव कुछ, कुछ हैं शाकाहार।
जो दोनों भोजन करें, वो है सर्वाहार॥

मानव जीवन में बहुत, जीवो का उपयोग।
मिलती इनसे वस्तुएँ, हम सब करें प्रयोग॥

गाय, भैस, बकरी हमें, देती मीठा दुग्ध।
भोजन है सम्पूर्ण यह, पोषण देता दुग्ध॥

माँस और अंडा हमें, देते हैं कुछ जीव।
ग्रहण करें आहार सब, मानव जन्तु अरु जीव॥

मधुमक्खी देती हमें, मीठा मधु स्वादिष्ट।
स्वास्थ्य हेतु उपयुक्त है, होते सभी बलिष्ट॥

रेशम मिलता कीट से, भेड़ से मिलाता ऊन।
इनसे बनते वस्त्र हैं, नित - नित नए रंगीन।।

बैल, ऊँट, घोड़ा, गधा, साधन में उपयुक्त।
गाय, भैस के मलमूत्र से, खाद उर्वरायुक्त॥

जंतुओं में अनुकूलन

(तर्ज- फूलों का तारों का सबका कहना है|)

आओ बच्चों परिवेश की बात करते हैं,
कई प्रकार के यहाँ जीव जन्तु रहते हैं,
इनकी जगह को "वास स्थान" कहते हैं।।

जीवों को चार भागों में बाँटा गया है,
थलचर, जलचर, नभचर,उभयचर कहा है,
परिस्थिति के अनुसार ये तो ढ़लते हैं।।

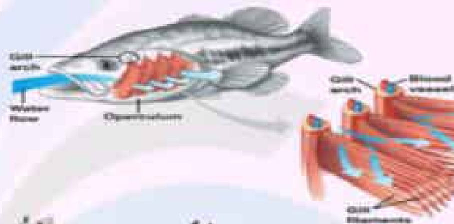

मछली जल में गलफ़ड़े से सांस लेती है,
बिन पानी के बच्चों ये जी नहीं सकती है,
ऑक्सीजन को गलफड़े सोखा करते हैं।।

शेर जंगल का राजा शक्तिशाली कहाता,
लम्बे, नुकीले, नख से शिकार कर पाता,
हिरण, चीता भी मैदानी भागों में मिलते हैं।।

कई दिनों तक बिन पानी के जीवित रहता है,
कूबड़ में संचित वसा का उपयोग करता है,
ऊँट को "रेगिस्तान का जहाज" कहते हैं।।

ठण्डे क्षेत्रों में याक, भेड़, भालू हैं मिलते,
सर्दी में घने, लम्बे बालों से ये बचते,
मोटी त्वचा से भी अनुकूलन करते हैं।।

आकाश में उड़ते पक्षी बच्चों दिखते सुन्दर,
हल्की, खोखली हड्डियाँ होतीं इनके अन्दर,
अपना घोंसला ये पक्षी स्वयं बनाते हैं।।

पौधे के भाग एवं उनके कार्य (भाग-1)

(तर्ज- चेहरा है या चाँद खिला है।)

पौधे के पाँच भाग हैं होते,
जड़, पत्ती, फल, फूल, तना।
आओ बच्चों जानेंगे हम,
भागों के कार्य और रचना।।

जड़ पौधे को मजबूती से,
भूमि में जमाकर रखती।
मिट्टी से जल और पोषक,
तत्वो को अवशोषित करती।
गाजर, शलजम, मूली, चुकन्दर,
ये सब्जी जड़ कहलातीं।
भोजन इकट्ठा हो जाने से,
जड़ें फूल मोटी हो जातीं।
सीधा खड़ा रखता पौधे को,
देता सहारा है तना।।
आओ बच्चों............

वाष्पोत्सर्जन, प्रकाश संश्लेषण,
श्वसन क्रिया पत्ती के कार्य।
पर्णफलक और पर्णरन्ध्र,
पत्ती के लिए होते अनिवार्य।
क्लोरोफिल से हरा रंग,
पत्तियों का बच्चों होता है।
हरा पेड़ ही सबसे ज्यादा,
वातावरण शुद्ध करता है।
प्रकाश संश्लेषण की मदद से,
पौधों का भोजन बना।।
आओ बच्चों..............

पौधे के भाग एवं उनके कार्य (भाग-2)

(तर्ज- चेहरा है या चाँद खिला है।)

पौधे के पाँच भाग हैं होते,
जड़, पत्ती, फल, फूल, तना।
आओ बच्चों जानेंगे हम,
भागों के कार्य और रचना।।

पौधे के सुन्दर, आकर्षक,
भाग होते हैं फूल और फल।
रंग-बिरंगे खुशबू वाले,
फूल की पंखुड़ी को कहें दल।
दल के बीच में लम्बी-लम्बी,
पतली रचनाएँ होतीं।
ठीक मध्य में कीप की जैसी,
सुन्दर संरचना होती।
पुंकेसर और स्त्रीकेसर,
फूल से ही तो फल बना।।
आओ बच्चों..............

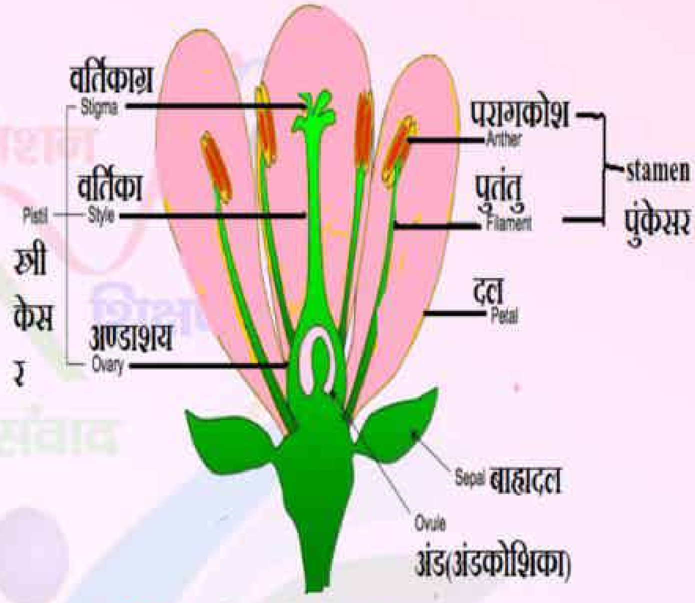

चित्र- पुष्प की अनुदैर्घ्य काट

आम, बरगद सरसों, गुड़हल,
स्थलीय पौधे कहलाते।
जलकुंभी, कुमुदिनी, कमल,
ये जलीय पौधे मन को भाते।
नागफनी मरुस्थलीय पौधा,
चपटा और गूदेदार तना।
भोजन,पानी संचित करता,
जीवित रहे पानी के बिना।
सदाबहार वृक्षों की आकृति,
शंक्वाकार सुंदर रचना।।
आओ बच्चों..............

दादी माँ की बगिया

गर्मियों की छुट्टियों में आया घर 'विशाल' था।
बगिया दादी माँ की देख करके वो निहाल था॥

थी गुड़ाई कर रही पौधों की उसकी दादी माँ।
मिट्टी खोद भुरभुरा बनाती उसकी दादी माँ॥

ऐसा करने से मिले जल-वायु खूब पौधों को।
पानी हवा धूप भी जरूरी पेड़-पौधों को॥

कल निराई बाग की करेगी उसकी दादी माँ।
लाभ क्या निराई से कहेगी उसकी दादी माँ॥

अधिक खाद धूप जल मिले है इससे पौधों को।
खाद क्या है और लाभ क्या है इससे पौधों को॥

अधिक उपजाऊ बनाती खाद मिलके मिट्टी को।
उपज ज्यादा है कराती खाद मिलके मिट्टी को॥

रासायनिक पदार्थ से बनती रासायनिक खाद है।
कूड़ा कचरा और गोबर ही तो जैविक खाद है॥

पेड़ पौधों से अनेको फायदे हैं जान लो।
जग में जीवन है इन्हीं से बात मेरी मान लो॥

आक्सीजन हम सभी को पेड़-पौधों से मिले।
जिसके कारण इस जगत में जीवों की साँसे चले॥

मेला

आओ बच्चों लें सभी, मेला का आनन्द।
अपने-अपने मित्र संग, सब बच्चे सानन्द॥

रोहन की छोटी बहन, रीना और सुहेल।
रोहन अरु दलजीत संग, मित्र मुदित यह मेल॥

चेहरे सबके खिल गए, खुश थे सारे मित्र।
मेला की अदभुत छटा, सुन्दर और सुचित्र॥

गुब्बारा लेने लगे, रोहन रीना दलजीत।
चिडिया बन्दर अरु गदा, से खेले सब मीत॥

इधर-उधर घूमें सभी, मन में था उल्लास।
दिखा खिलौना बेचता, पहुँचे उसके पास॥

प्लास्टिक के सामान का, कम करिए उपयोग।
बच्चों की बातें बहुत, अच्छी और सुयोग॥

ठेला देखा चाट का, पहुँचे उसके बाट।
बिना ढके रखी हुई, फुलकी आलू चाट॥

भूखा था रोहन बहुत, मूँगफली ली खाय।
चहक उठे तब मित्र सब, गरम जलेबी पाय॥

खोया बच्चा ले गए, खोया-पाया केन्द्र।
देख खुशी माँ-बाप की, मुदित हुए सब फ्रेन्ड॥

झूला भी झूले सभी, ना झूला दलजीत।
सर्कस देख प्रसन्न हो, झूम उठे सब मीत॥

फोड़े गुब्बारे सभी, गन से गोली मार।
निशाने के खेल में, रीना थी होशियार॥

देरी होती देखकर, घर लौटे सब मित्र।
मेला के वृतान्त का, वर्णन करें सचित्र॥

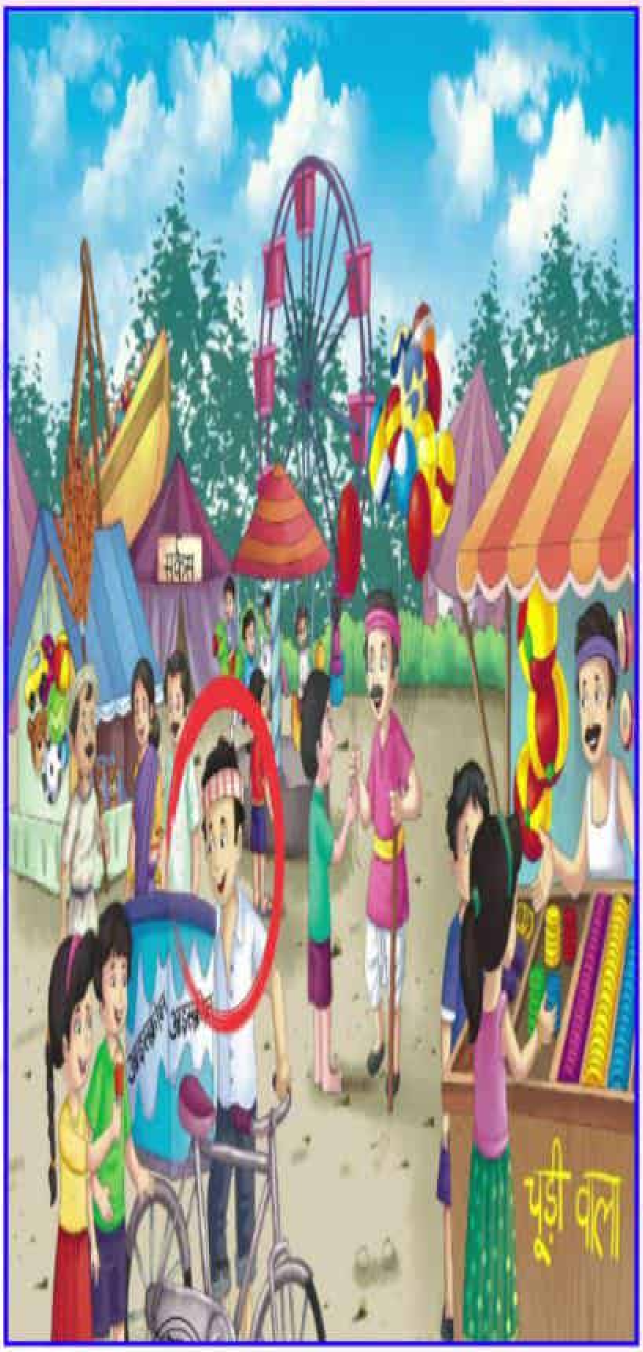

जल है जीवन

पानी बिन जीवन नहीं, पानी है अनमोल,
व्यर्थ बहाओ ना इसे जल का समझो मोल।
खाने, पीने, धोने, में सब लोग करें उपयोग,
दैनिक जीवन में करो शुद्ध जल का प्रयोग।।

आता है जल कहाँ से कहाँ ये संचय होत,
ताल झील पोखर नदी ये सब जल के स्रोत।
धरातलीय अरु भूमिगत दो प्रकार के जल,
शुद्ध स्वच्छ जल दे कुआँ, बोरवेल अरु नल।।

कूड़ा-कचरा अपशिष्ट से दूषित होता नीर,
दूषित जल उपयोग से रोगी होत शरीर।
व्याधि तपेदिक डायरिया हैजा पेचिश रोग,
सेवन दूषित नीर से रोगी होते लोग।।

पेड़-पौधों पर भी पड़े जल का बुरा असर,
जल प्रदूषण को रोको मत फैलाओ जहर।
शुद्ध, स्वच्छ जल ही पिएँ अपनानी है रीति,
पीने योग्य बने जल जान लो बच्चो नीति।।

जल चक्र

उबालकर, छानकर, क्लोरीन से करो शुद्ध,
लाल दवा के प्रयोग से पानी ना रहे अशुद्ध।
स्वच्छ रखो शरीर को खूब पीयो तुम पानी,
रोगो से मुक्ति मिले ना हो शरीर को हानि।।

वाष्पन एवं संघनन

आओ बच्चों तुम्हें बताएं, एक अनोखी बात।
जल बन भाप मिले बादल से, तब होती बरसात॥

वर्षा में सब भर जाते हैं, नदी पोखरे कूप।
कैसे जल गायब हो जाता, जब होती है धूप॥

बात बड़ी है अचरज वाली, सोचो बच्चों कैसे।
आओ समझें इस घटना को, खेल खेल में ऐसे॥

जाओ बच्चों लेकर आओ, दो बर्तन में पानी।
छाया-धूप में रखो इनको, तब फिर बढ़े कहानी॥

दो घंटो के बाद जो देखा, दोनों में था अन्तर।
धूप में रखा जल कुछ था कम, कैसा जादू मन्तर॥

है विज्ञान, नहीं जादू ये, बच्चों से हम कहते।
पानी का बन भाप यूँ उड़ना, इसे 'वाष्पन' कहते॥

पानी की इक और क्रिया है, जो है बहुत निराली।
जाओ बच्चों लेकर आओ, तुम गिलास इक खाली॥

बर्फ के टुकड़े भरकर इसमे, कुछ क्षण का तुम ले लो टेक।
सतह बाहरी पर गिलास की, जल की उभरी बूँद अनेक॥

ठंडा होकर जलवाष्पो का, द्रव में हुआ बदलना।
बच्चों तुम ऐसी घटना को, क्रिया 'संघनन' कहना॥

यात्रा - नानी के घर की

साइकिल की घंटी ट्रिन-ट्रिन सुन,
निशा दौड़कर आयी।
खोला दरवाजा पापा को,
सारी बात बतायी॥

नानी के घर जल्दी जाने,
को दोनों बच्चे बेकरार।
तैयारी सारी कर ली है,
बैग भी है बिल्कुल तैयार॥

पापा हमको टिकट दिखाओ,
कैसा होता हम लें जान।
कौतूहल से देखा उसको,
बच्चे टिकट रेल का मान॥

ट्रेन में बहुत मजा आएगा,
बैठेंगे जब हम सब साथ।
टिकट रेल का नहीं ये बच्चों,
पापा ने बतलायी बात॥

कैसे पता चलेगा पापा,
टिकट रेल का या बस का।
छाप राज्य परिवहन का इसमे,
देखो यही टिकट बस का॥

रेल से ना जाने की सुनकर,
बेटी निशा दिखी उदास।
रेल से ही लौटेंगे हम सब,
टिकट लिया पहले ही खास॥

नानी के घर जाने खातिर,
बस में बैठ गए सब साथ।
बैग टांग कंधे में अपने,
और मशीन लिए जो हाथ॥

कौन आदमी है ये पापा,
इसे कहो क्या हैं कहते।
बस का कंडक्टर ये बेटा,
परिचालक भी हैं कहते॥

जिन लोगों के पास टिकट न,
उन्हें टिकट ये देता है।
ड्राइवर इसके संकेतों पर,
रुकता और चल देता है॥

पहुँच गए सब नानी के घर,
तीन दिवस यूँ बीत गया।
स्टेशन पहुँचे ऑटो से,
मीटर देख हिसाब किया॥

ट्रेन में हम सबको बैठाकर,
नानाजी ने विदा किया।
टिकट परीक्षक को पापा ने,
चेक करने को टिकट दिया॥

'यात्रा - नानी के घर की',
सिखलाती है बात नई।
हम बच्चों ने जाना इससे,
यात्रा संबन्धित बात कई॥

लतिका की डायरी (भाग- 1)

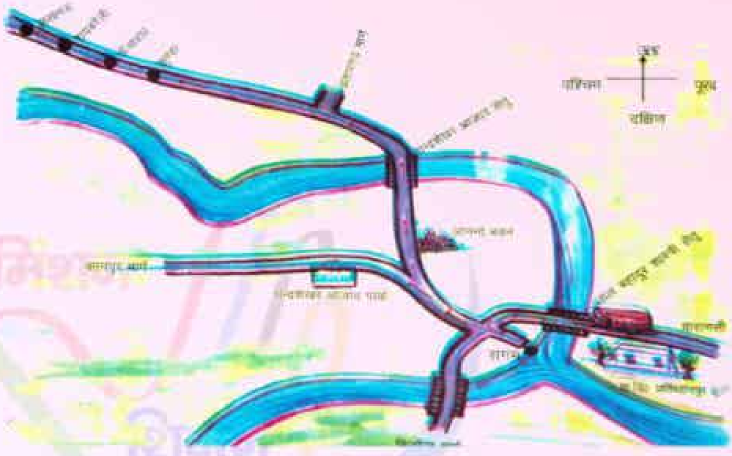

आज खुशी से झूम उठा मन,
याद मुझे आयी वह बात।
हेडमास्टर ने हमें बताया,
भ्रमण को जायेगे सब साथ॥

प्रयागराज लखनऊ चलेंगे,
हेड टीचर ने बताया।
मैडम टीचर बस में चढ़कर,
'रूट मैप' दिखलाया॥

प्रतिष्ठानपुर झूँसी से हम,
प्रयागराज की ओर चले।
गंगा यमुना सरस्वती,
नदियाँ ये तीनो जहाँ मिले॥

इन नदियों के मिलने को ही,
हम सब संगम कहते।
अकबर का इक किला यही है,
मास्टर सर थे कहते॥

चन्द्रशेखर आजाद पार्क है,
बच्चों प्रयागराज की शान।
आनन्द भवन स्वराज भवन की,
सुंदरता है आलीशान॥

बैठे सब दोबारा बस में,
पहुँच गए लखनऊ शहर।
गोमती नदी के तट पर,
बसता है लखनऊ नगर॥

लतिका की डायरी (भाग- 2)

राजधानी उत्तर प्रदेश की,
विधान सभा है भवन यहीं।
रेजीडेंसी, रूमी दरवाजा,
भूल-भुलैया सभी यहीं॥

भूल-भुलैया से निकले तो,
पहुँच गए हम चिड़ियाघर।
देखा फिर लखनऊ महोत्सव,
बच्चे, मैडम, टीचर सर॥

था प्रदेश के कई जिलो का,
अलग-अलग स्टाल लगा।
कृष्ण जन्मस्थल होने से,
मथुरा का सौभाग्य जगा॥

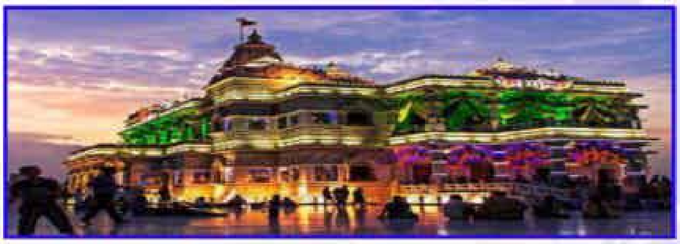

जिला कानपुर दो भागो में,
बँटा हुआ हमने देखा।
एक नगर तो इक देहात का,
अलग-अलग मंजर देखा॥

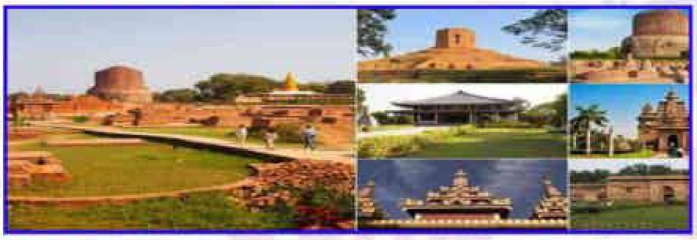

गोरखपुर जनपद के संग ही,
वाराणसी का था पंडाल।
सारनाथ का अदभुत चित्रण,
से बतलाया सारा हाल॥

झाँसी का स्टाल सजा,
मूरत थी लक्ष्मीबाई की।
ताजमहल का भव्य चित्र,
आगरा पंडाल सजाई थी॥

लतिका इक बच्ची थी, जिसने लिखी ये बातें सारी।
बच्चों हम जो पाठ पढ़े हैं, हैं 'लतिका की डायरी' ॥

हमारा प्रदेश

आओ बच्चों तुम्हें दिखायें, नक्शा भारत देश का।
इस नक्शे में छिपा हुआ है, नक्शा उत्तर प्रदेश का॥

उत्तर प्रदेश है राज्य हमारा,
हम सब इसमे रहते हैं।
उत्तर में नेपाल पड़ोसी देश,
सभी ये कहते हैं॥

उत्तर प्रदेश के राज्य पड़ोसी,
बच्चों तुमको बतलाएं।
नक्शे में सब दिख जाएंगे,
आओ बच्चों दिखलाएं॥

हिमांचल प्रदेश, उत्तराखण्ड,
है इसके उत्तर में।
राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली,
बसते इसके पश्चिम में॥

उत्तर प्रदेश के राज्य पूर्वी,
हैं बिहार अरु झारखण्ड।
दक्षिण में छत्तीसगढ़ का व,
मध्य प्रदेश का है भूखण्ड॥

जनसंख्या में सबसे बड़ा है,
राज्य ये भारत देश का।
जनपद पचहत्तर हैं इसमे,
देखो मैप प्रदेश का॥

राजधानी उत्तर प्रदेश की,
है बच्चों लखनऊ नगर।
राज्यपाल अरु चीफ मिनिस्टर,
रहते हैं सब इसी शहर॥

उत्तर प्रदेश को तीन प्राकृतिक,
भागों में हैं बांटते।
आओ बच्चों इन भागों के,
बारे में कुछ जानते॥

'भाबर एवं तराई' इक है,
इक 'गंगा-यमुना' मैदान।
'दक्षिण का पठार' एक है,
बच्चों लो तुम इनको जान॥

गंगा, यमुना, टोंस, बेतवा,
सोन, शारदा, केन नदी।
चम्बल नदी, राप्ती रीवर,
रामगंगा, गोमती नदी॥

उत्तर प्रदेश में बहने वाली,
बच्चों ये सब हैं नदियाँ।
इन नदियों को बहते-बहते,
बीत गयीं कितनी सदियाँ॥

यातायात का सबसे प्यारा,
सड़क यहाँ का है साधन।
रेलमार्ग और वायुमार्ग भी,
इस प्रदेश का है साधन॥

सबसे लम्बी सड़क 'एन एच-2',
इस प्रदेश से है निकली।
नेशनल वाटरवे इक ही है,
प्रयागराज से हल्दिया चली॥

स्वशासन

भारतवर्ष बना है अपना,
राज्य अट्ठाइस से मिलकर।
नौ प्रदेश हैं और यहाँ पर,
केन्द्र का शासन है जिसपर॥

स्थानीय लोगों के द्वारा,
शासन संचालित करते।
स्थानीय स्वशासन इसको,
बच्चों हम सब हैं कहते॥

पंचायती है राज व्यवस्था,
गाँव की सुविधाओं खातिर।
काम तीन स्तर पर करती,
जानें ये क्या है आखिर॥

प्रथम ग्राम पंचायत बच्चों,
क्षेत्र पंचायत है दूजा।
जनपद की पंचायत जो है,
शासन का स्तर तीजा॥

प्रमुख ग्राम पंचायत का जो,
ग्राम प्रधान इसे कहते।
वर्ष अठारह से ऊपर जो,
वोटिंग कर इसको चुनते॥

कई ग्राम पंचायत मिलकर,
क्षेत्र पंचायत है बनती।
ब्लॉक प्रमुख के द्वारा बच्चों,
क्षेत्र व्यवस्था है चलती॥

क्षेत्र पंचायत जनपद की मिल,
जिला पंचायत है बनती।
जनपद के ग्रामीण क्षेत्र का,
विकास कार्य ये है करती॥

गाँव की बातें कर ली बच्चों,
नगर की कुछ बातें कर लें।
नगर की कैसे चले व्यवस्था,
आओ इसको भी सुन लें॥

नगर पंचायत, नगरपालिका,
नगर निगम इसमे होते,
नगर निगम के प्रमुख को बच्चों,
'महापौर' हम सब कहते॥

जिला प्रशासन की कुछ बातें,
आओ बच्चों हम लें जान।
जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक,
जिला प्रशासन की ये शान॥

न्यायाधीश हैं न्याय प्रदाता,
विवादों का हल करते।
स्वाश्थ्य प्रबन्धन सुविधाओं का,
सी.एम.ओ. हैं लेखा रखते॥

डी.आई.ओ.एस. और सी.डी.ओ.,
जिला के हैं ये अधिकारी,
बेसिक शिक्षा को जो देखें,
वो बेसिक शिक्षा अधिकारी॥

प्रदेश का शासन प्रबन्ध

मीना बोली रमेश भैया से, अब किसका चुनाव होना।
पिछले वर्ष ही तो लोगों ने,गाँव का मुखिया था चुना।।

विधानसभा का चुनाव होना, रमेश ने मीना को यह बताया।
25 साल या उससे अधिक का, व्यक्ति ही चुनाव लड़ पाया।।

पाँच साल के लिए प्रतिनिधि, विधानसभा में चुना जाता।
जीते हुए उम्मीदवारों को, एम०एल०ए० कहा जाता।।

तीस वर्ष का हो जो व्यक्ति, विधान परिषद का चुनाव लड़ेगा।
विशेष प्रतिनिधि द्वारा ही इसे, एम०एल०सी० चुना जाएगा।।

राज्यपाल राज्य के मुखिया, राजभवन 'लखनऊ' में रहते।
विधानसभा, विधान परिषद में, राष्ट्रपति ही नियुक्ति करते।।

उच्च न्यायालय प्रयागराज में, और खंडपीठ लखनऊ में।
लोगों को यहाँ न्याय मिले, जिला न्यायालय भी जिले में।।

जनता की भलाई के लिए, यहाँ नहीं किसी का प्रतिबंध।
हमारे राज्य उत्तर प्रदेश में, एसा होता है शासन प्रबंध।।

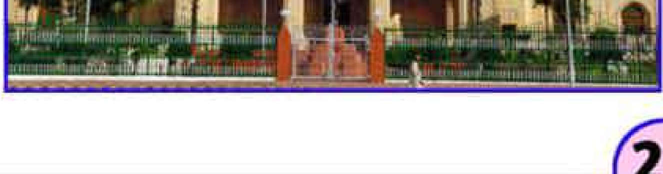

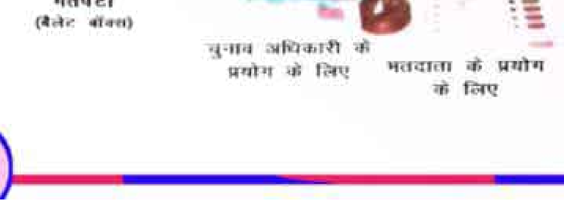

दोस्ती

(तर्ज - तुझे सूरज कहूँ या चन्दा)

आओ बच्चों! सुनो कहानी, एक गाँव बड़ा ही प्यारा।
वहाँ रहता नौ वर्षीय बालक, देवा था माँ का दुलारा॥

जब चार वर्ष का था वह, तो तेज बुखार के कारण।
पोलियो से पैर गए मारे, देवा का तबाह हुआ बचपन॥
ना खेला कभी दोस्तो संग, ना स्कूल जाए बेचारा।
वहाँ रहता नौ वर्षीय बालक, देवा था माँ का दुलारा॥

शुरू, अनवर, दुलारी तीनो, देवा के मित्र थे प्यारे।
साथ उनके खेल ना पाता, देख दुखी हो जाते सारे॥
सबने मिलकर यह सोचा, चलो मित्र को देगें सहारा।
वहाँ रहता नौ वर्षीय बालक, देवा था माँ का दुलारा॥

जंगल से लकड़ी लेकर, बढ़ई से जाकर बोले।
वैशाखी बना दो दादा, देवा भी साथ में खेले॥
दोस्ती वही सच्ची होती, जो मुश्किल में दे सहारा।
वहाँ रहता नौ वर्षीय बालक, देवा था माँ का दुलारा॥